International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 247-251

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 247-251
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-04-2024
Accepted: 09-05-2024

लोकेश शर्मा
पी-एच.डी. शोधार्थी, संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

डॉ. दीप लता
शोध निर्देशक, सहायक आचार्य, संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
लोकेश शर्मा
पी-एच.डी. शोधार्थी, संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

आचार्य केशवराम शर्मा की संस्कृत रचनाओ में वर्णित हिमाचल की देव-परम्परा

लोकेश शर्मा, डॉ. दीप लता

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश एक ओर जहां अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध है, वहीं दूसरी ओर इसे देवी-देवताओं का निवासस्थान होने के कारण 'देव भूमि' नाम का गौरव भी प्राप्त है। इस प्रदेश के कण-कण पर इस क्षेत्र में विद्यमान देवों का अधिकार है, जिस कारण यहां का प्रत्येक व्यक्ति इस भूमि की सेवा देवतओं की सौगात मान कर करता है।[1] हिमाचली संस्कृति तथा परम्पराओं का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जो इन देवी-देवताओं से अछूता रहा हो।

अतः हिमाचल के प्रख्यात संस्कृत साहित्यकार, राष्ट्रपति सम्मान से सुशोभित, महामहोपाध्याय आदि विविध उपाधियों से अलङ्कृत आचार्य केशवराम शर्मा द्वारा अपनी रचनाओं में इन देवी-देवताओं से सम्बन्धित विषयों को प्रचुरता से वर्णित किया गया है। वे अपने काव्यों में ऐसे प्रदेश (हिमाचल) का वर्णन करते हैं जहाँ तपस्वियों के समूह निवास करते हैं, शान्ति अपना घर बनाकर रहती है। जिससे अधिक शोभा संसार के किसी भी पदार्थ में नहीं है और देव समूह सभी प्रकार से जिसकी रक्षा करता है।[2] केशवाचार्य देवताओं के निवास को हिमाचल की ख्याति का कारण स्वीकार कर कहते हैं कि-

> ख्यातिं प्राप्ता सकलशिखरिश्रेष्ठता या हिमाद्रेर्देवावासो गुणगणयुतस्तत्र विस्पष्टहेतुः।[3]

अर्थात् हिमाचल की समस्त पर्वतों में जो श्रेष्ठता ख्याति को प्राप्त हुई है उसका प्रसिद्ध कारण अन्य अनेक गुण समूहों सहित यहां देवताओं का निवास ही है।

हिमाचल में देवी-देवताओं का वर्चस्व अत्यधिक है जिस कारण यहां प्रत्येक घर के गृह देवता, कुल के कुल देवता तथा गांव के ग्राम देवता होते हैं। प्रत्येक देवता के अपने मन्दिर तथा प्रजा होती है, जो सुव्यवस्थित पद्धति से देव पूजन के कार्यों के साथ-साथ अपनी दैनिक जीवनचार्य का भी कठोरता से पालन करती है। यह देव समुदाय यहां के रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं का अभिन्न हिस्सा होते हैं।[4] हिमाचली समाज का देवताओं के साथ जो गहन सम्बन्ध है उसके विषय में केशवाचार्य कहते हैं कि-

प्राप्ताद् धान्याद् दधति प्रथमं देवभागं पृथग् वा पुत्र जाते सविधि सदने स्वेष्टदेवं यजन्ति।
आपृच्छन्ति प्रणतमनुजाः कर्मणां तं तथादौ सर्वारम्भाः शिखरिणि सदा देवसाक्ष्याद् भवन्ति॥[5]

अर्थात् यहां पर कृषक लोग फसल पैदा होने पर सबसे पहले देवता के लिए अलग भाग रख देते हैं। पुत्र पैदा होने पर इष्टदेव को अपने घर निमन्त्रित कर पारम्परिक विधि से उनकी पूजा करते हैं तथा किसी भी नए काम को करने से पहले विनय पूर्वक देवता की आज्ञा लिया करते हैं। वस्तुतः हिमाचल में सभी कार्यों का आरम्भ देवमण्डल के ही साक्ष्य में होता है।

देव शब्द की निष्पत्ति तथा अर्थ

दिवादिगण में वर्णित दिव् धातु से अच् प्रत्यय करने पर 'देवः' शब्द की निष्पत्ति होती है। यहां दिव्[6] धातु क्रीडा, विजीगीषा (जीतने की इच्छा), व्यवहार, द्युति (तेजस्विता,चमक), स्तुति, मोद (प्रसन्नता), मद, कान्ति तथा गति आदि अर्थों में प्रयुक्त होती है, जो देव शब्द के विभिन्न अर्थों को प्रकाशित करती है। इसी विषय को शब्दकल्पद्रुम में स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि- क्रीडति सर्गादिति विजिगीषति असुरान् व्यवहरति सर्व्वभूतेष्वात्मतया द्योतते स्तूयते स्तुत्यैः सर्व्वत्र गच्छति तस्माद्देवः[7] अर्थात् जो सृष्टि के रूप में क्रीड़ा करता है, असुरों से जीतने की इच्छा करता है, समस्त प्राणियों से अपनत्व का व्यवहार करता है, स्तुतियों द्वारा जो प्रकाशित तथा वन्दित होता है तथा जो सब ओर जाने में समर्थ हो वह देव होता है।

अतः दीव्यति प्रकाशते इति देवः अर्थात् जो प्रकाशित होता है वह देव है अथवा दीव्यति आनन्देन क्रीडतीति देवः[8] अर्थात् जो आनन्द से विहार करे वह देव होता है। निरुक्तकार देव शब्द के निर्वाचन में कहते हैं कि- देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा भवति[9] अर्थात् जो दान देता है, जो चमकता है और जो दूसरों को प्रकाशित करता है वह देव है।

इसी देव शब्द से स्वार्थ में तल् प्रत्यय तथा स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय करने पर देवता शब्द निष्पन्न होता है (देव+तल्+टाप्=देवता)। यह देवता शब्द देव का ही पर्यायवाची होता है- देव एव देवता.....देवं द्युतिं क्रीडां वा तनोति या।[10] साथ ही जो जरा अर्थात् बुढ़ापे से पूर्णतः रहित हो वह देवता होता है- देवो निर्जरे।[11] हिमाचल के अधिकांश भागों में देवता को 'देऊ' या 'देओ' कहा जाता है। किन्नौर क्षेत्र में इन्हें ही 'शू' तथा लाहौल में 'ला' कहा जाता है। इन सभी शब्दों से तात्पर्य भी देवता शब्द के समान ही 'देने वाला' होता है, जो अपने उपासकों की इच्छाओं को पूर्ण करता हो।[12]

देवताओं के प्रकार

वैदिक साहित्य में प्रायशः देवों की संख्या 33 स्वीकार की गई है, जिनमें से 11 पृथ्वी स्थानीय, 11 अन्तरिक्ष स्थानीय तथा 11 द्यु स्थानीय देवता हैं। इनमें से पृथ्वी स्थानीय देवताओं में अग्नि, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं में इन्द्र और द्युस्थानीय देवताओं में सूर्य का सर्वाधिक महत्व स्वीकार किया गया है।[13] उपनिषदों में 8 वसु, 11 रूद्र, 12 आदित्य, 1 इन्द्र तथा 1 प्रजापति को मिलाकर कुल 33 देवों का उल्लेख प्राप्त होता है।[14] परन्तु ऋग्वेद[15] की कुछ ऋचाओं में देवताओं की संख्या 3339 बताई गई है, जो पौराणिक काल तक आते-आते 33 करोड़ तक हो चुकी थी।

हिमाचल में देवताओं के अनेकविध रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां के प्रत्येक गांव का अपना एक स्थान देवता, कुल का कुल देवता तथा क्षेत्र का क्षेत्रीय देवता होता है, जिसका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में उस स्थान-विशेष से होता है। उन अनेकविध देवताओं तथा उनके प्रकारों के विषय में केशवाचार्य कहते हैं कि-

शंभोरंशा क्वचिदिह सुराः श्रीधरांशाः क्वचिद्वा
दृश्यन्तेऽन्ये कृतवसतयो रामकृष्णादिकांशाः।
पुण्यैश्चान्ये मनुजमहिता देवभावं प्रपन्नाः संख्यातीतं
गणयितुमलं कोऽथवा देवमूलम्॥[16]

अर्थात् इस प्रदेश में कहीं तो देवगण शङ्कर के अंश हैं, कहीं पर कुछ विष्णु के अंश हैं, कुछ अन्य राम और कृष्ण के अंश भी विराजमान दिखते हैं। कुछ दूसरे ऐसे भी हैं जो पुण्य कर्मों के द्वारा देवभाव (देवत्व) को प्राप्त हुए और मनुष्यों के द्वारा पूजित हुए। परन्तु वास्तव में देवता का मूल सङ्ख्यातीत है, उसे गिनने में कौन समर्थ हो सकता है?

परन्तु इतने प्रकार तथा भेद होने पर भी सूक्ष्म विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि ये सभी देव परमात्मा की ही अनेक अभिव्यक्तियां है, जिसके विषय में ऋग्वेद के ऋषि कहते हैं कि- एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति[17]..... अथवा एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति[18] अर्थात् वह ब्रह्म एक ही है तथा भिन्न-भिन्न रूपों से प्रकाशित होता है। इसी विचार को निरुक्तकार भी व्यक्त करते हैं कि- महाभाग्याद् देवतायाः एक आत्मा बहुधा स्तूयते[19] अर्थात् महा-ऐश्वर्य सम्पन्न होने से एक होता हुआ भी वह देवतात्मा बहुत प्रकार से स्तुति किया जाता है। परन्तु वास्तव में सभी देवता एक ही परमात्मा के अंश हैं। परमात्मा से ही इन सभी की उत्पत्ति हुई है।[20]

हिमाचल प्रदेश में वैदिक तथा पौराणिक देवताओं के अतिरिक्त ऐसे देवताओं की भी पूजा-अर्चना की जाती

है जिनमें कुछ ऋषि-मुनि तथा सामान्य व्यक्ति भी है। जो अपने अनेक शुभ कर्मों के द्वारा देवकोटी (देवत्व) को प्राप्त हुए हैं- प्राप्ता वाऽन्ये हृयृषिमुनिनराः कर्मभिर्देवभावं।[21] यह हिमाचल- वासियों की सहजता, सत्कर्मों के प्रति आस्था तथा उच्च आदर्शो को दर्शाता है।

देवताओं द्वारा शासन

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि पुकारने के पर्याप्त हेतु उपस्थित है, परन्तु उनमें से देवताओं की शासन व्यवस्था का स्थान सर्वोपरि है। यहां के देवता केवलमात्र पूजा के ही साध्य-साधन ही नहीं होते अपितु एक प्रशासक के रूप में अपने क्षेत्र का प्रबन्धन भी चलाते हैं। हिमाचलवासी केवल मात्र अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए तथा किसी शक्ति के भय से इन देवताओं की पूजा-अर्चना नहीं करते अपितु देवता की सुव्यवस्थित पद्धति होती है जिसके अन्तर्गत देवता की प्रजा उनका उल्लंघन नहीं कर सकती। देवताओं के इस संगठित विधान का पालन उनके प्रत्येक अनुयायी को करना होता है।[22]

केशवाचार्य के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सावधानी बरतने वाले पर्वतीय लोग देवताओं द्वारा निर्धारित कर्तव्यों का पालन करने में कभी भी लापरवाही नहीं करते। इस कारण सभी देवता यहां अपने श्रद्धालु जनों को आशीर्वाद प्रदान कर उनकी कल्याण वृद्धि करते हैं। देव और मानव का यह पक्का बन्धन बहुत प्राचीन समय से यहां विद्यमान है।[23]

हिमाचल में प्रचलित इस प्राचीन शासन व्यवस्था का देवता ही प्रमुख होता है । वह एक राजा के समान अपनी प्रजा के सुख-दुःख में भागीदार रहता है तथा हर समय प्रत्येक स्थान पर उपस्थित रहता है। क्योंकि देवता एक अदृश्य शक्ति है अतः उनके तानाशाह, निर्दयी तथा क्रूर होने का कोई आधार ही नहीं है। प्रशासन की सर्वोच्च शक्ति देवता में निहित होती है। गुर देवता का प्रवक्ता होता है जिसके माध्यम से देवता प्रजा से वार्तालाप करते हैं तथा अपनी आज्ञा देते हैं। कारदार देवता की प्रबन्धन व्यवस्था को देखते हैं। भण्डारी देवता की सम्पत्ति तथा भण्डार को सम्भालते हैं। बजन्तरी देवता की प्रसन्नता हेतु ढोल, रणसिंग तथा शहनाई आदि बजाते हैं। इस प्रकार एक देवता के काम से कम 25 से 30 कर्मचारी होते हैं, जिन्हें देवता के प्रत्येक कार्यों में उपस्थित रहकर कर्तव्यनिष्ठता से अपने दायित्व का निर्वहन करना होता है।

एक देवता के अन्तर्गत एक या एक से अधिक ग्रामों की शासन व्यवस्था होती है। प्रत्येक क्षेत्र का एक प्रमुख देवता होता है। देवताओं की भी आपस में रिश्तेदारियां तथा वरिष्ठता-कनिष्ठ होती है। कोई किसी का भाई-बहन तथा कोई पुत्र-पिता होता है। अतः वे एक दूसरे का भरपूर मान-सम्मान करते हैं। देवता के निर्धारित क्षेत्र को 'हारगी' कहा जाता है, जहां रहने वाली प्रजा के प्रति देवता उत्तरदायी होता है।[24]

देवता तथा प्रजा का आपस में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होता है कि लोग इन से बातचीत करते हैं, रूठते-
मनाते हैं तथा हर सुख-दुःख में भागीदार बनते हैं। इस प्रकार उच्च आदर्शों वाले मानवों की देव रूप में स्वीकृति तथा देवताओं के साथ मानवीय सम्बन्ध स्थापित करना हिमाचलवासियों की विचित्र परम्परा का हिस्सा है।[25]

प्रत्येक देवता की अपनी शासन व्यवस्था होती है जिसके अधीन उनकी प्रजा अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढती है। अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न देवताओं को इस शासन-तन्त्र द्वारा लौकिक शक्तियां भी प्राप्त होती है। अतः वे अपनी अलौकिक शक्तियों द्वारा आध्यात्मिक तथा पारलौकिक विषयों के साथ-साथ इस प्रशासन पद्धति द्वारा अपनी प्रजा के भौतिक मामलों का भी निर्धारण करते हैं।[26] इस प्रकार हिमाचली समाज देवताओं द्वारा पूर्णतः अनुशासित है, अतः कहीं पर भी देवता की आज्ञा का उल्लंघन कर स्वेच्छाचारिता का बर्ताव नहीं करते।[27]

देवताओं के कार्य

हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक घर, कुल तथा गांव में किसी न किसी देवता की पूजा अर्चना होती ही है। देवगण अपनी आश्चर्यचकित कर देने वाली दिव्य कलाओं को अनेक स्थानों पर प्रदर्शित करते हैं, जो सदा सत्पुरुषों के हित का सम्पादन करती है।[28] अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न इन देवी-देवताओं पर आस्था के सहारे ही यहां के लोग अपने जीवन की समस्त कठिनाइयों से जूझते हैं। यह देवी- देवता ही उनके सम्बल, साथी तथा जीवन की धुरी होते हैं जो उन्हें हर परिस्थिति में राह दिखाते हैं। देवता और उनकी प्रजा का यह आपसी सम्बन्ध इतना गहन होता है कि वे दोनों आपस में एक मित्र के समान बातचीत आदि व्यवहार करते हैं। केशवाचार्य इन देवी-देवताओं के इसी सौहर्दपूर्ण सम्बन्ध को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि-

> देवा लोकैः सह समुदिताश्चारु नृत्यन्ति हृष्टास्तैरश्नन्ति क्षितितलकटे स्थापितः शेरते वा।
> वाचां वा तैर्विनिमयमलं कुर्वते हार्दिकीणां सम्बन्धोऽयं सुरमनुजयोरद्रिवर्जं क्व लभ्यः॥[29]

अर्थात् हिमाचल में देवता लोगों के साथ मिलकर सहर्ष मनोरम नृत्य करते हैं (पालकियों में झूम-झूम कर नाचते हैं), सहभोज के अवसर पर उनके साथ भोग लगाते हैं। भूमि पर बिछाए आसन पर बैठते और सोते हैं। इतना ही नहीं उनके साथ हार्दिक सहानुभूतिमय

बातचीत का विनिमय तक किया करते हैं। मनुष्यों और देवता का ऐसा अद्भुत सम्बन्ध इस पावन पर्वत को छोड़कर अन्यत्र कहां सुलभ है?

इस प्रकार अपने अनुयायियों के पथप्रदर्शक वे देवता उनकी नैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति हेतु उत्तरदायी होते हैं। इन सभी विषयों के अलावा भी यह देवी-देवता कुछ विशेष कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे समय-समय पर निश्चित यात्राएं करना, अपने मानने वाले प्रिय जनों के घरों में जाकर आतिथ्य ग्रहण करना, आश्रित भक्तजनों का कल्याण करना, पर्व के पवित्र कार्य में उत्सव का आयोजन करवाना, कभी-कभी प्रकृति के प्रकोप से उत्पन्न क्रूर बधाओं को शान्त करना, नृत्य आदि के उल्लास में सम्मिलित होना, क्षेत्र में किसी भी प्रकार का अत्याचार या भूत-प्रेत बाधा को शान्त करना, अपने श्रद्धालु समाज को एकता पूर्वक रहने की शिक्षा प्रदान करना तथा विनयशील भक्तजनों के मनोरथ पूरे करना आदि।[30] इसके अलावा भी वे सभी प्राकृतिक उपद्रव जो कोमल हृदय वाले पर्वत-वासियों को भयभीत कर देते हैं, उन सभी को प्रार्थना किए जाने पर देवगन अविलम्भ दूर कर देते हैं।[31]

देव-पालकी

वैदिक आख्यानों तथा पौराणिक कथाओं में देवी-देवताओं के वाहनों की जो परिकल्पना की गई है, उसी के साकार रूप को हिमाचली समाज ने देवपालकी के रूप में संजोया है। हिमाचल में देवताओं द्वारा एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने के विभिन्न साधनों के आधार पर उन्हें चार वर्गों में रखा जा सकता है- 1) रथ वाले देवता, 2) पालकी वाले देवता, 3) करंडू वाले देवता, 4) अन्य यात्रा साधन वाले देवी- देवता।[32] चाहे किसी व्यक्ति के घर अतिथि रूप में जाना हो, स्थानीय मेलों में उपस्थित होना हो या निश्चित यात्राएं आदि करनी हो, ये सभी कार्य देवपालकी के माध्यम से ही पूर्ण किए जाते हैं। समस्त देवसमाज इन पालकियों के माध्यम से ही लोगों के कन्धों पर यात्रा कर अपनी प्रजा के मनोरथ पूर्ण करते हैं।

रंग-बिरंगे वस्त्रों द्वारा सुसज्जित इन पालकियों के सिरे पर सोने या चांदी के छत्र लगाए जाते हैं तथा उसे मेलो-जात्रों के दिनों या विशेष अवसरों पर चारों ओर से अथवा सामने की ओर देवताओं की सोने या चांदी की छोटी मोहरों को संवारा जाता है।[33] केशवाचार्य इन पालकियों द्वारा देवयात्राओं के विषय में कहते हैं कि-

> स्कन्धारूढा अमरनिकरा रम्यवासोविभूषाशोभावन्तः
> सुषमशिविकाधिष्ठिता उत्सवेषु।
> गीतैर्वाद्यध्वनिभिरसकृद्-वृंहितैर्भुरिनृत्यैरानीयन्ते
> जयजपदैर्गुंजिताशान्तरालैः॥[34]

अर्थात् रमणीय वस्त्र-आभूषणों से सुशोभित हुए, सजी-धजी पालकियों में स्थापित लोगों के कन्धों पर विराजमान किए हुए असंख्य देव मनोहर गीतों, वाद्य-ध्वनियों और बार-बार नई-नई भंगिमाओं द्वारा उत्तरोत्तर बढ़ते हुए नृत्यों तथा दिशाओं के अन्तराल को गुंजायमान करते जय-जयघोष के द्वारा उत्सवों में ले जाते हैं।

देवताओं की यह पालकियाँ लोगों के कन्धों पर चलकर परिक्रमा, देवयात्रा, देवली आदि करती है, प्रत्येक मेलों में नृत्य करती हैं तथा उत्तर-प्रत्युत्तर भी देती है। देवी-देवताओं के इन वाहनों को कुल्लू में रथ, कांगड़ा में पालकी, शिमला में रौथ तथा किन्नौर में रथड़ नाम से जाना जाता है।[35]

देवताओं द्वारा वार्तालाप

हिमाचल प्रदेश अपनी प्राकृतिक छटा, अविरल शान्ति के साथ-साथ अपनी देव-परम्परा के कारण भी बाहर से आने वाले पर्यटकों के मन को मोहित करता है। क्योंकि यह देव-संस्कृति ही उन्हें चमत्कारी व आश्चर्यप्रद विषयों को जानने का अवसर प्रदान करती है। देवताओं का अपनी प्रजा से वार्तालाप करना, उनका रूठना और फिर लोगों के आग्रह पर मान जाना आदि सभी चमत्कार के ही विषय हैं।

देवता एक माध्यम के द्वारा अपनी प्रजा से बातचीत करता है जिसे स्थानीय भाषा में गुर, घणिता, चेला आदि विविध नामों से जाना जाता है। यही गुर देवता का प्रवक्ता होता है जिसके माध्यम से वह न्याय देता है, अपने विचार, आज्ञा तथा इच्छा को व्यक्त करता है।[36] जिसके विषय में केशवाचार्य कहते हैं कि-

> देवाविष्टा विरलमनुजा ज्ञातदेवेहितार्थाः शुद्धाचाराः
> प्रचलितवपुष्केशवन्तो वचोभिः।
> पृष्टा लोकैः परिषदि हितं मार्गमुद्बोधयन्ति मत्वा धर्मं
> तमथ खलु ते श्रद्धयाऽनुव्रजन्ति॥[37]

अर्थात् कुछ लोगों के माध्यम से देवगण कर्तव्यों का निर्देश देते हैं। इन शुद्ध आचरण वाले लोगों में देवता का आवेश आता है तथा उन्हें देवेच्छा का ज्ञान हो जाता है। जनसभा में लोगों द्वारा पूछने पर वे काँपते शरीर और केशों से देववाणी को बोलते हुए लोगों को हितकर कर्तव्यमार्ग पर चलने का निर्देश देते हैं। उनके अनुयाई भी जन-धर्म मानकर श्रद्धापूर्वक उस मार्ग का अनुसरण करते हैं।

हिमाचल की देव संस्कृति में गुर का एक विशिष्ट स्थान होता है। अपनी ही प्रजा में से शुद्ध आचरण तथा पवित्र मानस वाले व्यक्ति का चयन देवता स्वयं करते हैं तथा वह चयनित व्यक्ति अग्नि परीक्षा के उपरान्त ही गुर के रूप में स्वीकार किया जाता है। गुर देवता के

कर्मचारियों में से एक होता है जिसके माध्यम से देवता विविध बधाओं के कारणों, उनकी प्रजा द्वारा की गई गलतियों, अनिष्ट शान्ति के उपायों तथा अपनी इच्छा-अनिच्छा आदि को अपनी प्रजा के सम्मुख रखता है। साथ ही उसके क्षेत्र में जो कोई शुभ या अशुभ घटना घटने वाली हो, उसे वे देवगण अपने गुर के माध्यम से पहले ही अपनी प्रजा को बता देते हैं। आ पड़ने वाले जो भी संकट हों उन्हें दूर करने के लिए वे पहले ही उपायों का विधान करते हैं।[38]

इस प्रकार हिमाचल के देवी-देवता अपनी प्रजा के हितसाधन में सदैव तत्त्पर रहते हैं तथा उन्हें सन्मार्ग हेतु प्रेरित किया करते हैं। हिमाचलवासी भी देवताओं के अनुशासन को अपने जीवन में उतार कर सदैव देवाज्ञा का पालन करते हैं। हिमाचल स्थित देवी-देवताओं के विविध प्रकार, एक प्रजापालक के रूप में उनके कार्य, सामान्य लोगों के समान उनका व्यवहार, उनकी न्याय व्यवस्था, उनके द्वारा हिमाचल भूमि तथा यहाँ के जनमानस पर शासन, आदि विषय हिमाचल की देवपरम्परा के प्रमुख घटक हैं। जिनका वर्णन आचार्य केशवराम शर्मा द्वारा अपने संस्कृत साहित्य में प्रचुरता से किया गया है।

सन्दर्भ

1. अद्रावस्ति प्रतिकणमिह क्षेत्रदेवाधिकारो लोको भूमिं परिचरित वा देवदायाद्यबुद्ध्या।
   आनृण्यार्थं तदपरिमितश्रद्धया तत्सपर्या मत्वा प्रीत्याश्रयति नितरां नित्यकर्तव्यरूपाम्॥ हिमाचलवैभवम्, 6/2
2. विराजते तापसवृन्दवासः शान्तेरधिष्ठानमनुत्तमश्रीः।
   वृन्दारकव्रातसनाथितश्च हिमाचलः पर्वतराजिराजः॥ श्रीशालिग्रामचरितम्, 2/1
3. हिमाचलवैभवम्, 6/1
4. डॉ. सूरत ठाकुर, हिमाचल की देव-भार्थाएं, पृष्ठ 13
5. हिमाचलवैभवम्, 6/9
6. दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। धातुपाठ, 4/1
7. शब्दकल्पद्रुम्
8. शब्दकल्पद्रुम्
9. निरुक्त,7/4
10. शब्दकल्पद्रुम्
11. वाचस्पत्यम्
12. डॉ. सूरत ठाकुर, हिमाचल की देव-भार्थाएं, पृष्ठ 12
13. निरुक्त,7/2
14. बृहदारण्यकोपनिषद्,3/9/2
15. त्रीणि शता त्री सहस्रांण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् । औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ऋग्वेद, 10/52/6
16. हिमाचलवैभवम्, 6/3
17. ऋग्वेद, 1/164/46
18. ऋग्वेद, 10/114/5
19. निरुक्त, 7/1
20. एतस्यैव सा विसृष्टिरेष उ ह्येव सर्वे देवाः इति। बृहदारण्यकोपनिषद्, 1/4/6
21. हिमाचलवैभवम्, 6/4
22. श्री मौलूराम ठाकुर, हिमाचल में पूजित देवी-देवता,पृष्ठ 49
23. कर्तव्यानां गिरिभुवि भवा देवनिर्धारितानां नैवोपेक्षं क्वचिदपि जनाः कुर्वते सावधानाः।
    देवास्तस्माद्विमलचरितान् आशिषा वर्द्धयन्ति सम्बन्धोऽयं सुरमनुजयोर्बद्धमूलश्चिरञ्च॥ हिमाचलवैभवम्, 6/8
24. सुदर्शन वशिष्ठ, हिमालय में देव संस्कृति, पृष्ठ 112
25. डॉ. सूरत ठाकुर, हिमाचल की देव-भार्थाएं, पृष्ठ 13
26. श्री मौलूराम ठाकुर, हिमाचल में पूजित देवी-देवता,पृष्ठ 49
27. न देवताज्ञामतिवर्तते कचिद् गिरौ समाजस्त्रिदशानुशासितः॥ हिमाचलवैभवम्, 8/54
28. देवताः भूरिशः स्वीयामाश्चर्यवर्धिनीं कलाम्। यत्रानेकत्र विविधां दर्शयन्ति सतां हिताम्॥ श्रीमद्दिवाकराचार्यचरितम्, 2/8
29. हिमाचलवैभवम्, 6/21
30. यात्रातिथ्यं श्रितजनहितान्युत्सवाः पर्वकाले नृत्योल्लासाः कुपितप्रकृतिक्रूरबाधोपशान्तिः।
    अत्याचारप्रशमनमथ प्राणिनामैक्यशिक्षा वाञ्छापूर्तिश्च विनयवतां देवकार्याणि सन्ति॥ हिमाचलवैभवम्, 6/7
31. सर्वेऽनर्था गिरिमृदुजनत्रासदा भूरिवीर्यैरुत्सार्यन्ते त्वरितममरैः प्रार्थितैः कामपूरैः॥ हिमाचलवैभवम्, 6/18
32. हिमाचल का कला वैभव, सम्पादक-डॉ तुलसी रमण, पृष्ठ 137
33. श्री मौलूराम ठाकुर, हिमाचल में पूजित देवी-देवता,पृष्ठ 44
34. हिमाचलवैभवम्, 6/20
35. डॉ. सूरत ठाकुर, हिमाचल की देव-भार्थाएं, पृष्ठ 14
36. सुदर्शन वशिष्ठ, हिमालय में देव संस्कृति, पृष्ठ 112
37. हिमाचलवैभवम्, 6/15
38. कुलूतदेशे यच्चापि भावि स्यादशुभाशभम्। तदादिशति पूर्वं हि भुवना गुरुमाध्यमात्॥
    भाविनः संकटा ये स्युरुपायास्तदपाकृतौ। विनिर्दिशति पूर्वं हि जगदम्बा दयान्विता॥ श्रीभुवनेश्वरीचरितम्, 4/11-12